

NCERT SOLUTIONS

CLASS - 12th



aglasem.com

Class : 12th

Subject : Political science

Chapter : 7

Chapter Name : जन आंदोलनों का उदय

Q1 इनमें से कौन सा कथन गलत है-

चिपको आंदोलन

(अ) पेड़ों को काटने से रोकने के लिए एक पर्यावरण आंदोलन था।

(ब) ने पारिस्थितिक और आर्थिक शोषण के सवाल उठाए

(स) महिलाओं द्वारा शुरू किया गया शराब विरोधी आंदोलन था

(द) ने मांग की कि स्थानीय समुदायों का वहां के प्राकृतिक संसाधनों पर नियंत्रण होना चाहिए।

Answer. (स) महिलाओं द्वारा शुरू किया गया शराब विरोधी आंदोलन था

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q2 नीचे दिए गए इन कथनों में से कुछ गलत हैं। गलत कथनों की पहचान करें और आवश्यक सुधार के साथ उन्हें फिर से लिखें:

(अ) सामाजिक आंदोलन भारत के लोकतंत्र में बाधा डाल रहे हैं।

(ब) सामाजिक आंदोलनों की मुख्य ताकत सामाजिक वर्गों में व्याप्त जनाधार है।

(स) भारत में सामाजिक आंदोलन उभरे क्योंकि कई ऐसे मुद्दे थे जिन्हें राजनीतिक दल संबोधित नहीं करते थे।

Answer. (अ) यह कहना कि सामाजिक आंदोलन भारत के लोकतंत्र के कामकाज में बाधा हैं, पूरी तरह से गलत है। लोगों की जागरूकता के लिए सामाजिक आंदोलन आवश्यक हैं।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q3 उन कारणों की पहचान करें, जिन्होंने 1970 के दशक के प्रारंभ में यूपी में चिपको आंदोलनों का नेतृत्व किया था। इस आंदोलन का प्रभाव क्या था?

Answer. उत्तराखंड के दो या तीन गांवों में चिपको आंदोलन शुरू हुआ, जब वन विभाग ने गांवों को कृषि उपकरण बनाने के लिए राख के पेड़ों को गिराने से मना कर दिया। हालांकि, वन विभाग ने व्यावसायिक उपयोग के लिए खेल निर्माता को उसी जमीन का आवंटन किया। इससे ग्रामीण नाराज हो गए और उन्होंने सरकार के इस कदम का विरोध किया। यह संघर्ष जल्द ही उत्तराखंड क्षेत्र के कई हिस्सों में फैल गया। क्षेत्र के पारिस्थितिक और आर्थिक शोषण के बड़े मुद्दे उठाए गए थे। ग्रामीणों ने मांग की कि बाहरी लोगों को कोई वन शोषण अनुबंध नहीं दिया जाना चाहिए और स्थानीय समुदायों का भूमि, वन और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों पर प्रभावी नियंत्रण होना चाहिए।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q4 भारतीय किसान संघ किसानों की दुर्दशा को उजागर करने वाला एक प्रमुख संगठन है। नब्बे के दशक में इसके द्वारा किन मुद्दों को संबोधित किया गया और वे किस हद तक सफल रहे?

Answer. मेरठ आंदोलन को ग्रामीण शक्ति - किसान काश्तकारों की शक्ति, के रूप में देखा गया। ये आंदोलनकारी किसान भारतीय किसान यूनियन (BKU) के सदस्य थे, जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा क्षेत्र के किसानों के संगठन थे। अस्सी के दशक के किसान आंदोलन में BKU अग्रणी संगठनों में से एक था। BKU ने गन्ने और गेहूं के लिए उच्च सरकारी कीमतों को ध्वस्त कर दिया, कृषि उपज के अंतर-राज्य आंदोलन पर प्रतिबंधों को समाप्त कर दिया, उचित दरों पर बिजली की आपूर्ति की गारंटी दी, किसानों को ऋण के कारण पुनर्भुगतान की छूट और किसानों के लिए एक सरकारी पेंशन का प्रावधान दिया गया।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q5 आंध्र प्रदेश में शराब-विरोधी आंदोलन ने कुछ गंभीर मुद्दों पर देश का ध्यान आकर्षित किया। ये कौन से मुद्दे थे?

Answer. आंध्र प्रदेश राज्य के दूरदराज के गांवों में ग्रामीण महिलाओं ने इस अवधि के दौरान शराबबंदी के लिए माफियाओं के खिलाफ और सरकार के खिलाफ लड़ाई लड़ी। इन आन्दोलनों को बढ़ावा दिया गया, जिन्हें राज्य में शराब-विरोधी आंदोलन के रूप में जाना जाता था। चर्चा के दौरान महिलाओं ने अपने परिवारों में पुरुषों द्वारा स्थानीय रूप से पी गई शराब के सेवन की बढ़ती खपत की शिकायत की। शराब की आदत की गांव के लोगों के बीच

गहरी जड़ें थीं और उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बर्बाद कर रही थी। इसने क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को काफी हद तक प्रभावित किया। शराब के इन कुप्रभावों से सबसे अधिक पीड़ित महिलाएँ थीं, क्योंकि इससे परिवार की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो गई और महिलाओं को परिवार के पुरुष सदस्यों, विशेषकर पति की हिंसा का खामियाजा भुगतना पड़ा।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q6 क्या आप शराब विरोधी आंदोलन को महिला आंदोलन मानेंगे? क्यों?

Answer. शराब विरोधी आंदोलन एक स्थानीय आंदोलन था जो महिलाओं द्वारा शुरू किया गया था जो उनके परिवारों के पुरुष द्वारा शराब में वृद्धि से सबसे अधिक प्रभावित थी। यह स्पष्ट रूप से एक महिला आंदोलन था जो स्थानीय स्तर पर शुरू किया गया था लेकिन आंध्र प्रदेश में महिलाओं की सबसे खराब स्थिति के कारण बढ़ गया। इसने राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया। महिलाओं ने शिकायत की कि उनके परिवारों के पुरुषों की शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बर्बाद करने में कई गुना वृद्धि हुई। पहली पहल मुख्य रूप से राज्य की महिलाओं द्वारा ही की गई थी, इस आंदोलन को बाद में अन्य राज्यों द्वारा अपनाया गया था।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q7 नर्मदा बचाओ आन्दोलन ने नर्मदा घाटी में बांध परियोजनाओं का विरोध क्यों किया?

Answer. अस्सी के दशक की शुरुआत में मध्य भारत की नर्मदा घाटी में एक महत्वाकांक्षी विकासात्मक परियोजना शुरू की गई थी। इस परियोजना में 30 बड़े बांध, 135 मध्यम आकार के और नर्मदा और इसकी सहायक नदियों पर बनने वाले लगभग 3,000 छोटे बांध शामिल हैं, जो मध्य प्रदेश, गुजरात और महाराष्ट्र के तीन राज्यों में बहती हैं। गुजरात में सरदार सरोवर परियोजना और मध्य प्रदेश में नर्मदा सागर परियोजना दो सबसे महत्वपूर्ण और सबसे बड़े, बहुउद्देश्यीय बांध परियोजना के तहत योजनाबद्ध थे। नर्मदा बचाओ आंदोलन नर्मदा को बचाने के लिए एक बड़ा आंदोलन था। इन बांधों के निर्माण का विरोध किया और देश में चल रही विकास परियोजनाओं पर सवाल उठाया। प्रारंभ में आंदोलन ने उन सभी के उचित और न्यायोचित पुनर्वास की मांग की, जो परियोजना से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित थे। इस आंदोलन ने निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर भी सवाल उठाए जो बहुउद्देश्यीय बांध परियोजना प्रोजेक्ट बनाने में जाते हैं। आंदोलन ने यह भी पूछा कि लोकतंत्र में, कुछ लोगों को दूसरों के लाभ के लिए बलिदान करने के लिए क्यों मजबूर किया जाना चाहिए।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q8 क्या किसी देश में आंदोलनों और विरोधों से लोकतंत्र मजबूत होता है? उदाहरण के साथ अपने उत्तर की पुष्टि करें।

Answer. आंदोलन और विरोध निश्चित रूप से एक लोकतंत्र को मजबूत करते हैं, क्योंकि यह लोगों की इच्छा को दर्शाता है यह सरकार की नीतियों के कुछ अवगुणों और राष्ट्रीय नीतियों के कुछ नकारात्मक पहलू को भी दर्शाता है। विरोध और आंदोलन यह दर्शाता है कि जिस समाज में वे रह रहे हैं वह आदर्श समाज नहीं है। समाज के कुछ सकारात्मक और साथ ही कुछ नकारात्मक पहलू हैं। विरोध और आंदोलन यह भी दिखाते हैं कि सरकार की नीतियां लोगों के लिए इतनी सही नहीं हैं और इसमें बदलाव की जरूरत है। इसलिए विरोध और आंदोलन समाज का एक आंतरिक हिस्सा है जो लोकतंत्र में होना चाहिए।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली

Q9 दलित पैंथर्स ने किन मुद्दों को संबोधित किया?

Answer. दलितों को गाँव की ऊँची जाति द्वारा गाँवों में सबसे ज्यादा प्रभावित किया जाता था। मुख्य गाँव के अलावा गाँवों में दलित बस्तियाँ स्थापित होती रहीं। उन्हें पीने के पानी के लिए सामान्य स्रोत तक पहुंच से वंचित कर दिया गया। समाज में दलित महिलाओं का बड़े पैमाने पर अपमान किया गया। समाज के प्रत्येक उच्च जाति द्वारा गाँव के हर स्तर पर उनके साथ दुर्व्यवहार और अपमान किया गया। दलितों को समाज में कभी भी कोई स्वतंत्रता या सम्मान या किसी भी प्रकार की समानता नहीं मिली। अब भी आधुनिक दुनिया में दलितों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है जो अपवित्र और गैर मानवीय हैं।

Page : 146 , Block Name : प्रश्नावली